भारतीय संस्कृति का स्वरूप

डॉ. सुनीता तिवारी,

एसो0 प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग, मु. ला. ज. ना. खेमका महाविद्यालय, सहारनपुर

सारांश

भारतीय संस्कृति में मानव धर्म को अत्यन्त कल्याणकारी माना गया है। भारतीय संस्कृति में जिन उदार तत्वों का समावेश है उनमें तत्वज्ञान के वे मूल सिद्धान्त रखे गये हैं जिनको जीवन में ढालने से आदमी वास्तव में मनुष्य बन सकता है। सुसंस्कृत होने से मानव का अन्तर और वाह्य जीवन सुन्दर और सुखी बन जाता है। संस्कृति जीवन के सामाजिक व्यवहारों को निश्चित करती है। संस्कृति साध्य नहीं साधक है। संसार की समस्त संस्कृतियों में आध्यात्मिक प्रकाश देने में भारत का प्रथम स्थान है। हमारे जीवन का संचालन आध्यात्मिक आधारभूत तत्वों पर टिका हुआ है। भारतीय संस्कृति के प्रति पूर्ण कृतज्ञता प्रकट करते हुये इसका नाम भारत–निर्मित विश्व संस्कृति रखा गया है। इसी आधार पर भारत को चक्रवर्ती एवम् जगद्गुरू कहा गया है। वास्तव में सामाजिक, आर्थिक, लौकिक, पारलौकिक सभी प्रकार की उन्नति का विधान भारतीय संस्कृति में निहित है।

महत्वपूर्ण शब्दः *सांसारिक, आध्यात्मिक, कार्य–प्रणाली, मूलभूत सिद्धान्त, मन्थन, संस्कार, समन्वयात्मक।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ. सुनीता तिवारी,
''भारतीय संस्कृति का स्वरूप'',
शोध मंथन जून 2017,
पेज सं0 30.33
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No.5(SM412)

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति की आन्तरिक इच्छा यही होती है किवह सुख–शांति से रहे, अधिक से अधिक जीवन का आनन्द लेकर दीर्घ काल तक आन्तरिक शांति–संतोष का रस प्राप्त करता रहे। सामूहिक रूप से समुन्नत विचार वाले विद्वानों तथा विचारकों ने समय, समय पर इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये ऐसे विचार तथा कार्य के रूप स्थिर किये हैं, जिनके अनुसार आचरण करके समस्त सांसारिक और आध्यात्मिक सुख साधन प्राप्त हो सकते हैं।

व्यक्ति और समाज आनन्दित रह सकते हैं और पृथ्वी पर ही स्वर्ग की सृष्टि हो सकती है। यदि इन विचारों के अनुसार जीवन ढाल लिया जाय, तो मनुष्य का जीवन मधुर बन सकता है और समाज में देवत्व विकसित हो सकता है।

संसार के जिन विचारकों ने इन विचार तथा कार्य–प्रणालियों को सोचा और निश्चय किया है, उनमें भारतीय विचारक सबसे आगे रहे हैं। विचारों की पकड. तथा चिंतन की गहराई में हिंदू धर्म की तुलना अन्य सम्प्रदायों से नहीं हो सकती। भारत के हिन्दू विचारकों ने जीवन मन्थन कर जो नवनीत निकाला है, उसके मूलभूत सिद्धान्तों में वह कोई दोष नहीं मिलता, जो अन्य सम्प्रदायों या मत–मजहबों में मिल जाता है।

भारतीय संस्कृति में मानव धर्म को अत्यन्त व्यापक तथा समस्त मानव मात्र के लिये अत्यन्त कल्याणकारी माना गया है। वह मनुष्य में ऐसे विचार और भाव जागृत करता है, जिन पर आचरण करने से मनुष्य और समाज स्थायी रूप से सुख और शांति का अमृत घूँट पी सकता है। भारतीय संस्कषति में जिन उदार तत्वों का समावेश है उनमें तत्वज्ञान के वे मूल सिद्धान्त रखे गये हैं, जीवन में ढालने से आदमी वास्तव में मनुष्य बन सकता है।

'संस्कृति' शब्द का अर्थ है सफाई, स्वच्छता, शुद्धि या सुधार। जो व्यक्ति सही अर्थों में शुद्ध है। जिसका जीवन परिष्कष्त है वही सभ्य और सुसंस्कृत कहा जायेगा। जब हम भारतीय संस्कृति शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा तात्पर्य उन मूलभूत विचारों से होता है, जिन पर आचरण करने से मानव जीवन में अच्छे संस्कार उत्पन्न हो सकते हैं और जीवन शुद्ध परिष्कृत बन सकता है।

सुसंस्कृत होने से मानव का अन्तर और वाह्य जीवन सुन्दर और सुखी बन जाता है। अच्छे संस्कार उत्पन्न होने से मन, शरीर और आत्मा तीनों ही सही दिशाओं में विकसित होते हैं।

मनुष्य पर संस्कारों का ही गुप्त रूप से राज्य होता है। सुसंस्कृत मनुष्यों के समाज में ही अक्षय सुख–शांति का आनन्द लिया जा सकता है। 'संस्कृति' प्राप्त कर लेना ही मुख्य महाव्क्य है। मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

'संस्कृति' की परिभाषाएँ अनेक है और विद्वानों ने भिन्न–भिन्न रूपों में इसकी व्याख्याएँ की हैं। यह विकास का एक रूप नहीं, विभिन्न रूपों की ऐसी समन्वयात्मक समाष्टि है, जिसमें एक रूप स्वतः पूर्ण होकर भी अपनी सार्थकता के लिये दूसरे का सापेक्ष है।

किसी मनुष्य समूह के साहित्य, कला, दर्शन आदि में संचित ज्ञान और भाव का ऐश्वर्य ही उसकी संस्कृति का परिचायक नहीं उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति का साधारण शिष्टाचार भी

उसका परिचय देने में समर्थ है, क्योंकि संस्कृति जीवन के वाह्य और आंतरिक संस्कार का क्रम ही तो है ओर इस दृष्टि से उसे जीवन को सब ओर से स्पर्श करना होगा।

संस्कृति जीवन के सामाजिक व्यवहारों को निश्चित करती है और उनकी संस्थाओं को चलाती है, वह उनके साहित्य और उनकी भाषा को बनाती है, वह उनके जीवन के आदर्श, उनके जीवन के सिद्धान्तों को प्रकाश देती है। वह समाज के भावात्मक और आदर्श विचारों के बीच निहित होती है, जो समाज और व्यक्ति को महत्व देती है। संस्कृति साध्य नहीं साधक है।

मनुष्य पशुता से जितना ऊँचा है, उतना ही संस्कृत है। जिसकी कृतियॉ अपने विकास में जितनी ही सूक्ष्म हो पाई है, उतना हीवह संस्कृत हो पाया है।

किसी भी व्यक्ति का सांस्कृतिक महत्व इस बात पर निर्भर है कि उसने अपने अहम् से अपने को कितना बन्धन–मुक्त कर लिया है। वह व्यक्ति भी संस्कष्त है, जो अपनी आत्मा को साफ कर दूसरे के उपकार के लिये उसे नम्र और विनीत बनाता है।

जितना व्यक्ति मन, कर्म, वचन से दूसरों के प्रति उपकार की भावनाओं और विचारों को प्रधानता देगा, उसी अनुपात से समाज में उसका सांस्कृतिक महत्व बढेगा। सामाजिक सद्गुण ही, जिनमें दूसरों के प्रति अपने कर्तव्य–पालन या परोपकार की भावना प्रमुख है, व्यक्ति की संस्कृति को प्रौढ बनाती है।

निष्काम भाव से मनुष्य पूर्णता के लिये सतत् प्रयत्न ही संस्कृति है। मनुष्य के अच्छे कार्य तथा विचार–व्यवहार सभ्यता के द्योतक होते हैं। ये ही सामूहिक रूप से किसी देश या जाति की संस्कृति है। इस प्रकार संस्कृति सभ्यता का परिणाम है और दूसरी ओर सभ्यता प्रत्येक देश, समाज की संस्कृति का व्यावहारिक रूप है।

संस्कृति के चार पहलू हैं – शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक। प्राचीन तत्वदर्षी ऋषियों ने जिन सूक्ष्म आधारों पर सुख–शान्ति प्राप्ति का मार्ग दिखाया, उसे संस्कृति के अन्तर्गत रखा जाता है।

यह ऋषि–प्रणीत, विचार पद्धति और कार्य प्रणाली ही एक मात्र ऐसी पद्धति है, जिसे अपनाकर मनुष्य स्वयं सुख–शान्ति से रह सकते हैं। यह तत्वज्ञान समस्त विश्व के लिये था, परन्तु चॅुकी इसका आविष्कार भारत में हुआ, इसलिये इसका नाम भारतीय संस्कृति रखा गया। यह कल्याणकारी और आवश्यक विचार प्रणाली है।

संसार की समस्त संस्कृतियों में भारत की संस्कृति ही प्राचीनतम है। आध्यात्मिक प्रकाश संसार को भारत की देन है। हमारे जीवन का संचालन आध्यात्मिक आधारभूत तत्वों पर टिका हुआ है। भारतीय संस्कृति के प्रति पूर्ण कृतज्ञता प्रकट करते हुये इसका नाम भारत–निर्मित विश्व संस्कृति रखा गया है। इसकी विजय दुंद भी विश्व के प्रत्येक भाग में बजी।

इसी आधार पर भारत को चक्रवर्ती एवम् जगद्गुरू कहा गया। वास्तव में सामाजिक, आर्थिक, लौकिक, पारलौकिक सभी प्रकार की उन्नति का विधान भारतीय संस्कषति में निहित है।

संदर्भ ग्रंथ

(1) प्राचीन राजनीतिक चिन्तन –J. P. Ssuda.
(2) Vedic Culture – पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय
(3) The Story of civilization – Will Durant
(4) Our oriental Heritage
(5) Recovery of Faith – Dr Radhakrishnan.